

Padma Shri



SMT. NEIHUNUO SORHIE

Smt. Neihunuo Sorhie is a master crafts-person adept at weaving, knitting, bead-works, making decorative items and dry flowers.

2. Born on 23rd September, 1963, Smt. Sorhie learnt weaving at the age of 4 from her mother and by age of 6, she could weave clothes which was a big achievement as weaving has been a major occupation of Naga women. Her father passed away when she was very young and being the only girl child with two brothers, it was her duty to weave alongside her mother.

3. Due to financial problems, Smt. Sorhie could not complete her education and weaving became her routine duty which soon developed and became a passion. She immensely enjoyed it and is happily practicing it even today, albeit it is a languishing tradition. She does not regret about not completing her education as she has been well trained in weaving, tailoring and knitting, all of which she has learnt with no formal guidance.

4. Smt. Sorhie is also conducting training to local Naga Women in lion-loom weaving (300 trainees); knitting (20 trainees) and bead-works (15 trainees), and also to school drop outs, widows, children and students to enable them to become self-reliant and earn their livelihood. She is also a shop proprietor and a manager of a handloom and handicraft unit at a shopping market in Kohima for the last forty years. She endeavours to pass on the legacy of traditional crafts and preserve traditional Naga designs. She has participated in over a hundred twenty major exhibitions, trade-fairs and melas across India and in foreign countries representing India

5. Smt. Sorhie has received Sant Kabir Award (2018), National Award (2007), Balipara Foundation Naturenomics Assam Award (2014), State Awards (twice in 2001) and several miscellaneous awards.



श्रीमती नैहुनुओ सोही

श्रीमती नैहुनुओ सोही एक निपुण शिल्पकार हैं जो बुनकरी, बुनाई, मोतीकारी, सजावटी सामान और सूखे फूल तैयार करने में माहिर हैं।

2. 23 सितम्बर, 1963 को जन्मी, श्रीमती सोही ने 4 वर्ष की आयु में अपनी मां से बुनकरी सीखी और 6 वर्ष की आयु में वह कपड़े बुनने लगीं। यह एक बड़ी उपलब्धि थी क्योंकि बुनाई नागा महिलाओं का एक प्रमुख व्यवसाय रहा है। जब वह बहुत छोटी थीं, तब उनके पिता का निधन हो गया और दो भाइयों के बीच एक बहन होने के नाते, उनका कर्तव्य बुनकरी में अपनी मां का हाथ बंटाना था।

3. वित्तीय समस्याओं के कारण, श्रीमती सोही अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सकीं और बुनकरी उनका रोजमर्रा का काम बन गया। यह काम और आगे बढ़ा और एक दीवानगी बन गयी। उन्हें इसमें खूब आनंद आने लगा और आज भी वह खुशी-खुशी यह कार्य कर रही हैं, हालांकि यह एक मंद पड़ती परंपरा है। उन्हें अपनी शिक्षा पूरी न करने का पछतावा नहीं है क्योंकि उन्होंने बिना किसी औपचारिक मार्गदर्शन के बुनकरी, सिलाई और बुनाई को अच्छी तरह सीखा है।

4. श्रीमती सोही लॉयन-लूम बुनकरी (300 प्रशिक्षुओं); बुनाई (20 प्रशिक्षु) और मोतीकारी (15 प्रशिक्षु) में स्थानीय नागा महिलाओं और बीच में पढ़ाई छोड़ देने वाली लड़कियों, विधवाओं, बच्चों और विद्यार्थियों को प्रशिक्षण भी दे रही हैं ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपनी आजीविका कमा सकें। वह पिछले चालीस वर्ष से कोहिमा के एक शॉपिंग मार्केट में एक दुकान चला रही हैं और एक हथकरघा और हस्तशिल्प इकाई की प्रबंधक भी हैं। वह पारंपरिक शिल्प की विरासत को आगे सौंपने और पारंपरिक नागा डिजाइनों को संरक्षित करने का प्रयास करती हैं। उन्होंने पूरे भारत में और भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए विदेश में एक सौ बीस से अधिक प्रमुख प्रदर्शनियों, व्यापार-मेलों और मेलों में भाग लिया है।

5. श्रीमती सोही को संत कबीर पुरस्कार (2018), राष्ट्रीय पुरस्कार (2007), बालीपारा फाउंडेशन नेचरनॉमिक्स असम पुरस्कार (2014), राज्य पुरस्कार (2001 में दो बार) और अन्य विविध पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।